लघु शोध-प्रबंध सारांश

मुल्ला दाऊद और बुल्ले शाह के काव्य में अभिव्यक्त समाज

समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभाते दाऊद और बुल्ले शाह के बीच लगभग 300 वर्षों का फर्क है, लेकिन समाज के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आंशिक जगहों पर ही हुआ है। दो संस्कृतियों के बीच टकराहट के काल में दाऊद हमारे सामने आते हैं। भारतीय विषयों को चुनकर भारतीय भाषाओं में अपने काव्य सृजन द्वारा दाऊद भारतीयकरण का परिचय देते हैं। एक प्रख्यात लोक प्रचलित कथा को उठाकर इन्होंने चांदायन काव्य का सृजन किया है। विभिन्न साहित्यिक तत्वों का समावेश, चाहे वह बारहमासा पद्धति हो या फिर कथानक रूढ़ियाँ चांदायन में हम सब पाते हैं। चांदायन एक ज्ञानकोश की तरह है जिसमें तत्कालीन धर्म, संस्कृति, रहन-सहन आदि से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी हमें प्राप्त होती हैं।

प्रायः सूफी काव्य में प्रेम विषय प्रमुखता से उभरकर सामने आया है। सूफी कवि मान लिए जाने के कारण इनकी रचना में भी अलौकिकता के तत्व ढूंढने वालों की कमी नहीं है। शैली मात्र के अनुकरण से कोई रचना किसी संप्रदाय के मतों को प्रतिपादित नहीं करती। और फिर किसी रचनाकार की स्वतंत्रता को हम क्यों किसी विचारधारा का झंडा ही पकड़वाएं। जन्म से मुस्लिम होने के कारण मौलाना दाऊद की मुहम्मद साहब में आस्था स्वाभाविक है, लेकिन ये जरूरी नहीं की वह सूफी दर्शन की अभिव्यक्ति ही करेंगे। चांदायन में तो मौलाना दाऊद किसी मत-मतांतर के चक्कर में न पड़कर स्वच्छंद रूप से प्रेम को और सामाजिक यथार्थवादी स्थितियों को अपनी भाषा में व्याख्यायित करते हैं।

जहाँ एक तरफ चांदायन की कथा में लोकसंस्कृति और लोक समस्याओं के समन्वय से एक नया रूप ग्रहण करती है , वहीं बुल्ले शाह अपनी काफियों में दिखाते हैं कि किस प्रकार चरखा कातने में निपुण होना या न होना स्त्री कि सामाजिक स्थिति ससुराल में निर्धारित करती है। चांदायन एक लौकिक प्रेम काव्य है।

हांलाकि चांदायन को देखते हुए ऐसा लगता है कि दाऊद लोरिक चांदाके प्रेम और मिलन द्वारा सूफी दर्शन का प्रतिपादन करना चाहते हैं, लेकिन जब कथा आगे बढ़ती है तो कथा लोकसंस्कृति और लोक समस्याओं के समन्वय से एक नया रूप ग्रहण करती है , तब सूफीमत दू-दू तक नहीं दिखाई देता है। यहाँ यह बात विचारणीय है कि अगर चांदा ब्रह्म है तो जीव से एक मिलन के बाद इतनी विरह अग्नि में दग्ध क्यों हो जाती है ? ब्रह्म तो सात्विक है उसमें क्या तामसिक प्रवृत्तियों का आरोपण किया जा सकता है क्या ब्रह्म जीव के लिए इतना विकल हो सकता है। जिस जीव ने ब्रह्म को पा लिया है क्या वह सांसारिक नश्वरता की तरफ आकृष्ट होगा ?

वास्तव में मौलाना दाऊद ने सूफीमत के चौखटों में बंधकर प्रेमाख्यान लिखने का उद्देश्य नहीं बनाया था। यदि ऐसा होता तो उपरोक्त विषयों का वे ध्यान रखते और इस कथा को चांदा-लोरिक मिलन तक ही सीमित रखते , उसे आगे बढ़ाते ही नहीं। वहीं दूसरी और चांदायन को एक कवि की अभिव्यक्ति की तरह यदि हम पढ़ेंगे तो यह हमे समाज के कटु यथार्थ को प्रकट करने वाले भावुक कवि की अभिव्यक्ति के रूप में दिखाई देती है।

मौलाना दाऊद समाज के सुंदर-असुंदर सच और लोकजीवन का वर्णन मात्र अपने प्रेमाख्यानक महाकाव्य में करते हैं । बुल्लेशाह मस्त स्वतंत्र सूफी फकीर है । वे समाज की कुरीतियों का खंडन भी करते हैं। परंतु समानता यह है कि दोनों कवियों का लोकजीवन दर्शन पूर्णतः मौलिक, लौकिक और भारतीय है । अतः दोनों ही कवि अपने समय और समाज को वर्णित करने का सफल प्रयास करते हैं । मौलाना दाऊद ने बारहमासा में लोकजीवन का विरहनी के मुख से वर्णन करवाया है । मौलाना दाऊद महाकाव्यकार हैं और चांदायन में लोकजीवन के दर्शन सहज होते हैं ।

बुल्ले के काव्य में नारी का दाम्पत्य रूप प्रस्तुत हुआ है । इस दाम्पत्य रूप को ही शायद बुल्ला श्रेष्ठ मानता है । उनका मानना है कि पति के हाथ में नारी का उद्धार है । वे अपने काव्य में बार-बार जिक्र करते हैं कि 'शाह इनायत मुरशिद या प्रीतम ने मुझे बचा लिया'। जैसा कि पहले भी जिक्र हुआ है कि सूफी कवियों ने नारी को अपनी साधना में साध्य माना है, साधन नहीं । यही कारण है कि नारी का भोग्य रूप यहाँ नहीं दिखाई देता । किन्तु आज की आलोचनात्मक दृष्टि नारी के स्वतंत्र और सक्रिय स्थान की माँग करती है ।

मसलन, बुल्ला और मौलाना दाऊद समय की मांग से प्रभावित हैं और स्त्री के लिए सजग परंतु मौलाना दाऊद युग प्रवर्तक कार्य कर गए हैं। आज के ज्वलंत मुद्दे को और स्त्री की यौन संबंधी स्वतन्त्रता को वह चांदायन में 14वीं शताब्दी में वर्णित कर गए । बुल्ले शाह ने स्त्री को स्वतंत्र छोड़ दिया क्योकि उसके पास मस्तिष्क है, वह निर्णय ले सकती है । पुरुष से किसी मामले में वह कम नहीं, वह समाज का आधा हिस्सा है ।

मौलाना दाऊद अपने महाकाव्य में एक जटिल जाति व्यवस्था का भी वर्णन करते हैं जो विभिन्न व्यवसायों के कारण एक कोड जोड़ती रहती है ब्राह्मण से वैश्य-ब्राह्मण होना इसका उदाहरण है। हर युग में जाति व्यवसाय का सूचक है परंतु सामाजिक प्रतिष्ठा और रूढ़ि इसे संकीर्ण बना देती है। आर्यों से शुरू होने वाली वर्ण व्यवस्था के विकास और खंडन की प्रक्रिया साथ-साथ चल रही है।

बुल्ले शाह और मौलाना दाऊद 14वीं और 17वीं शताब्दी के कवि हैं, दोनों के समय में पूरे युग का अंतर है, एक आदिकाल का अंत है तो दूसरा आधुनिक काल की शुरूआत। दोनों समाजो में जाति व्यवस्था भी है शोषण भी है और वर्ग संघर्ष भी। अतः हर समय के समाज में जाति एक समस्या रही है, बस फर्क इतना है वहाँ मौलाना दाऊद ने वर्णन कर विरोध करने की कोशिश की और यहाँ बुल्ले शाह ने जाति के सारे मानदंड तोड़ कर बस एक व्यावसायिक कोड ही बना दिया।

बुल्ले शाह के सम्मान में कहे शब्द 'आलोचनात्मक यथार्थवादी' युक्ति संगत है परंतु वे यथार्थवादी आलोचक भी हैं, जो समाज की सच्ची आलोचना भी करते हैं और यथार्थ चित्रण भी करते हैं। परंतु आधुनिकता के आलोक में लिखा ग्रंथ चांदग्रन भी कुछ कम मूल्य नहीं रखता उसकी पहली खासियत तो उसका महाकाव्य होना ही है और इसके बाद वह समाज में स्त्री जीवन की रूढ़ियों को भी तोड़ता है। नारी विमर्श के नए मुद्दों को उठा कर मौलाना दाऊद ने समाज में नारी जीवन और जाति से जुड़ी रूढ़ियों का चित्रण किया है और उन्हें खंडित करने का प्रयास भी किया है।

मसलन दो अलग परिवेश और काल में लिखे गए काव्यों की तात्विक खोज-बीन से आभास होता है कि सूफी काव्य कहे जाने वाली ये काव्य रचनाएँ अपनी सामाजिक कसौटी पर खरी उतरती हैं। मौलाना दाऊद और बुल्ले शाह दो युगों में रचना करते हैं और कुछ अंतर के साथ समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं। जिसमें रूढ़ि परंपरा में बंधे मध्यकालीन भारत के साथ उनकी संघर्ष और परिवर्तन की चेतना भी अग्रसर हुई है।